International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 09-02-2021, Accepted: 08-03-2021, Published: 16-04-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 11-14

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध के महाकाव्य 'प्रिय प्रवास' में नारी

सुरेंदर सिंह
पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब, भारत

सारांश

हिन्दी साहित्य में अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने 'प्रिय प्रवास', 'चुभते चौपदे', 'रस कलश' आदि कालजयी कृतियाँ रचकर हिन्दी साहित्य को अमर कर दिया। इन कृतियों में हरिओध जी ने नारी को अत्यंत सम्मान देते हुए उनके विभिन्न रूपों, भावों, चेष्टाओं, सौन्दर्य का वर्णन किया है। प्रिय प्रवास में हरिऔध जी ने वात्सल्य का वर्णन अनेक प्रकार से किया है। वात्सल्य केवल मातृ तक सीमित न रखते हुए पितृ वात्सल्य, संयोग पक्ष का वात्सल्य, वियोग वात्सल्य का भी वर्णन किया है। नारी के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए उसे असीमित शक्ति का भंडार माना है। स्त्री को संसार की सुंदर एवं अद्वित्य रचना मानते हुए उन्होंने राधा की सुन्दरता का वर्णन किया है। श्री कृष्ण के मथुरा गमन के पश्चात राधा जी को राष्ट्र सेविका के रूप में दिखाना हरिऔध जी की मौलिकता का स्पष्ट परिचय है। उन्होंने स्पष्ट रूप में वर्णन किया है कि यद्यपि नारी का मन अत्यंत कोमल भावनाओं से भरा होता है परन्तु फिर भी वह अत्यंत साहस से भरी हुई है। राधा के माध्यम से उन्होंने कोमलमना नारी के दृढ़ साहस की सफल व्यंजना की है। उद्धव के आने पर गोकुलवासियों की श्री कृष्ण के वापिस लौटने की उम्मीद टूट जाती है तब राधा उन्हें ढांढस बंधवाती है। हरिऔध जी नारी के सभी पक्षों का वर्णन करने में पूर्णतः सफल हुए हैं।

मूल शब्द: साहित्य, काव्य, नारी, प्रेम, वात्सल्य, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

प्रस्तावना

हिन्दी पद्य विद्या में ब्रज भाषा लेखन के अग्रिम कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी के काव्य संसार में 'प्रिय प्रवास' 'पद्य प्रसुन' 'चुभते चौपदे' 'रस कलश' इत्यादि कृतियों को शामिल किया जाता है। हरिऔध जी ने महाकाव्य 'प्रिय प्रवास'(1914) को 17 सर्गों में विभाजित किया है। उन्होंनें 'प्रिय प्रवास' में श्री कृष्ण, राधा व यशोदा को आलौकिक न मानकर एक महापुरुष के रूप में दर्शाया है। 'हरिऔध' जी जो स्वयं मानवीय संवेदनाओं से लबालब हैं उन्होंनें अपने महाकाव्य 'प्रिय प्रवास' में नारी के विभिन्न रूपों का, भावों, चेष्टाओं के साथ उसके सौंदर्य का भी वर्णन किया है जो कि हमें 'हरिऔध' जी ने नारी के प्रति सवेंदना के दर्शन करवाता है। इस महाकाव्य में नारी के विभिन्न दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं-

नारी वात्सल्य की साकार मूर्ति: स्त्री हृदय के अंतर्गत कोमल भावों की अपार क्षमता होती है जिससे वह इस संसार में एक असीम सत्ता के तुल्य मानी जाती है। जिस प्रकार ईश्वर ने मनुष्य की रचना कर उसे इस सृष्टि में भेज, उसके हृदय में कोमल भावों को विकसित किया है उसी प्रकार स्त्री भी अपनी संतान को जन्म देकर उसमें भावनाओं का संचार किया है। स्त्री मन में अपनी संतान के प्रति वात्सल्य भाव होना स्वाभाविक है जोकि उसके गर्भ धारण के साथ ही उत्पन्न हो जाता है। प्रिय प्रवास में कवि ने वात्सल्य रूप को दो प्रकार से प्रकट किया है-

संयोग वात्सल्य:- संयोग पक्ष में मातृ या पितृ द्वारा संतान की क्रिड़ाएं, लीलाएँ और बौद्धिक विकास को सूचित करने वाली कृतियों आदि उद्दिपनवत प्रस्तुत होकर अनुभूति को रसवत्ता प्रदान करती है। "प्रिय प्रवास में संयोग के क्षणों की अनुभूति 'स्मृति' रूप में अंकित हुई है, किन्तु इसमें अनुभूति का आश्रय यशोदा ही नहीं है अपितु वे वृद्ध स्त्रियां भी हैं, जिन्होंनें यशोदा के समान कृष्ण की बाल लीलाओं के माध्यम से स्वयं वात्सल्य रस की अनुभूति की थी"।[1]

"ठुमुकते गिरते पड़ते हुए
जननी के कर की उगँली गहे।
सदन में चलते जब श्याम थे
उमड़ते तब हर्ष पयोधि था"।।[2]

वियोग वात्सल्यः- प्रिय प्रवास में नारी के वियोग वात्सल्य का भाव बहुत ही मर्मस्पर्शी है। "संयोगावस्था के अनुभाव -वियोग दशा में चित्रित होने के कारण वेदना का उद्रेक करते हैं। उनसे हृदय उल्लासित नहीं होता अपितु वर्तमान की असहायावस्था की तुलना में और अधिक दुखी हो जाता है"।[3] यहां पर 'हरिऔध' जी ने नारी के वियोग वात्सल्य का भाव इस प्रकार दर्शाया है-

"प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है,
दुःख जलनिधि डुबी का सहारा कहाँ है।
लख कर मुख जिसका आज लौ जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नयन तारा कहाँ है"।[4]

नारी का विरह रूपः हरिऔध ने अपनी कृति 'प्रिय प्रवास' में राधा को कृष्ण प्रेम विरह में व यशोदा को पुत्र विरह में जलते हुए दिखाया गया है। विरह भाव में यशोदा जी मरण स्थिति में हर समय नन्द जी से श्याम के आने का पूछते रहते थे क्योंकि एक माँ का हृदय अपने पुत्र के वियोग में इतना व्याकुल हो जाता है कि उसे भूख, प्यास व निंद्रा तक का ख्याल नहीं रहता। यहाँ पर नारी में व्याप्त विरह को यशोदा के माध्यम से 'हरिऔध' इस प्रकार दर्शाते है-

"यदि दिन कट जाता बीतती थी न दोषा,
यदि निशि टलती थी वार था कल्प होता।
पल पल अकुलाती ऊबती थी यशोदा,
रट यह रहती थी क्यों नहीं श्याम आए"।।[5]

श्री राधा के हृदय में भी कृष्ण जी के प्रति बहुत प्रेम है। वें भी कृष्ण जी के मथुरा आगमन की आशा लिए इस प्रकार इन्तजार कर रही हैं जिस प्रकार एक चातक पक्षी वर्षा की पहली बूंद का करता है। राधा जी के माध्यम से कवि 'हरिऔध' नारी पीड़ा को ऐसे दर्शाते हैं-

"रो-रो चिन्ता -सहित दिन को राधिका थीं बिताती,
आंखो को सजल रखती उन्मना थी दिखाती।
शोभा वाले जलद वपु की हो रही चातकी थीं,
उत्कण्ठा थी परम प्रबला वेदना बुद्धिमता थी"।।[6]

नारी का प्रेमिका रूपः- यहाँ पर कवि ने नारी के हृदय में प्रेम रूपी बेल का वर्णन किया है जिसमें राधा- कृष्ण जो कि बचपन से ही खेलते आएं हैं और अब उनमें धीरे- धीरे प्रेम की उत्पति को दर्शाया है। जिसमें नारी का पुरुष के प्रति अगूढ़ प्रेम का विवरण मिलता है। यहाँ कवि कहते हैं कि-

"युगल का वय साथ सनेह भी,
निपट-नीरवता सहा था बढ़ा।
फिर यही वर-बाल सनेह ही,
प्रणय में परिवर्तित था हुआ"।।[7]

नारी का लोकमंगलकारी रूपः- यहाँ पर 'हरिऔध' जी ने राधा के माध्यम से नारी को लोक सेवा की भावना से ओत-प्रोत दर्शाया कवि कहता है कि राधा उद्धव से संवाद करते हुए श्री कृष्ण जी न आने की उम्मीद से निराश न होकर स्वयं को लोक सेवा में अर्पित कर देती हैं जोकि स्त्री हृदय में मानवीय व राष्ट्रीय प्रेम की अवधारणा का दर्शाता है-

"मेरे जी में हृदय विजयी, विश्व का प्रेम जागा।
मैनें देखा परम-प्रभु को स्वणीय प्राणेश में ही"।।[8]

+ + + + +

"व्यापी है विश्व प्रियतम में, विश्व में प्राण प्यारा।
यों ही मैंने जगत-पति को, श्याम में है विकोला"।।[9]

नारी का सौंदर्य वर्णनः- स्त्री ईश्वर की सबसे सुन्दर व अद्वितीय रचना है। उसके हृदय की पवित्रता, शारीरिक सौन्दर्य के समान कोई तुलना नहीं है। 'हरिऔध' जी ने अपने महाकाव्य में राधा के माध्यम से नारी की सुंदरता का वर्णन किया है। उन्होंनें राधा को रमणी-वृन्द-शिरोमणि कहा है और उसके अंगो से युक्त उसका शरीर एवं अद्भुत उपवन के समान है कि जिस प्रकार उपवन में लगे पुष्प सभी को अपनी और आकर्षित करते है व सुंगध बिखेरते हैं उसी तरह स्त्री भी आकर्षण का केंद्र है। राधा के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि कहते है किः-

"रूपोद्यान प्रफुल्ल-प्राय-कलिका राकेन्दु बिम्बानना,
तन्वंगी कल हासिनी सुरसिका क्रीड़ा-कला पूतली।
शोभा-वारिधि की अमूल्य-मणि-सी लावण्य लीला-मयी,
श्री राधा-मृदु भाषिणी मृगदृगी-माधुर्य की मूर्ति थी"।।[10]

नारी के प्रति आशावादी दृष्टिकोणः- स्त्री मन यदि सूक्ष्म भावनाओं से परिपूर्ण है तो उसे उसकी कमजोरी नहीं समझनी चाहिए, क्योंकि उसकी दृढ़ता व साहस के कई उदाहरण भी इतिहास में दर्ज हैं। कवि ने नारी को आशामयी रूप में देखा है न कि उसके विलाप व दयनीय अवस्था का वर्णन किया है। उन्होंने राधा को अन्य कवियों की तरह विलाप करते हुए नहीं बल्कि श्री कृष्ण जी के वापिस न आने उम्मीद से व्याकुल गोकुलवासियों व यशोदा माता का ढ़ाढ़स बढ़ाते हुए दिखाया गया हैः-

"तो वे धीरे मधुर-स्वर से हो विनिता बताती।
हाँ आवेंगे, व्यथित-ब्रज को श्याम कैसे तजेंगें"।।[11]

निष्कर्षतः हम यहाँ देखते हैं कि अयोध्या सिहं उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने अपने महाकाव्य 'प्रिय प्रवास' में जहाँ अनेक विषयों को समाहित किया है वहीं नारी के प्रति भी मार्मिक दृष्टिकोण रखते हुए विभिन्न रूपों वात्सल्य, प्रेमिका, लोक सेविका, उसका सौंदर्य रूप का वर्णन, नारी का विरह इत्यादि को दर्शाया है। आलौकिक श्री कृष्ण व राधा जी का महामानव रूप में साधारणीकरण कर लौकिक जगत में संघर्ष करते हुए दिखाया गया है जो उनके आम मानव रूप को भी श्रद्धामयी बना देता है। हरिऔध जी ने नारी के सभी पक्षों को अपने काव्य में स्थान दिया है जो कि उनके हृदय में व्याप्त नारी के प्रति संवेदनाओं को उजागर करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आशा शिरोमणि- हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस, नेशनल पब्लिशिगं, हाउस, दिल्ली, पृ.213
2. अयोध्या सिहं उपाध्याय 'हरिऔध'- प्रिय प्रवास,हिन्दी साहित्य कुटीर, हाथीगली वाराणसी, पृ.33
3. आशा शिरोमणि- हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस, नेशनल पब्लिशिगं हाउस, दिल्ली, पृ.215
4. वेद प्रकाश शास्त्री- प्रिय प्रवास (आलोचनात्मक निंबध संकलन), दिल्ली, पृ.250
5. अयोध्या सिहं उपाध्याय 'हरिऔध'- प्रिय प्रवास, हिन्दी साहित्य कुटीर, हाथीगली वाराणसी, पृ.53
6. वही, पृ.55
7. वही, पृ.34
8. वेद प्रकाश शास्त्री, प्रिय प्रवास (आलोचनात्मक निंबध संकलन), दिल्ली, पृ.73
9. अयोध्या सिहं उपाध्याय 'हरिऔध'- प्रिय प्रवास, हिन्दी साहित्य कुटीर, हाथीगली वाराणसी, पृ.234
10. वही, पृ.223
11. वही, पृ. 32
12. वही, पृ.33
13. वही, पृ.234